THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

मेरी देखभाल कौन करेगा?

Who will take care of me?

Author – Beverly Goldsmith

The Christian Science Sentinel June 26, 2008

ऑस्ट्रेलिया में गणना करने वाले कार्यालय के अनुसार यह अनुमान लगाया गया है कि हर राज्य की लगभग एक तिहाई जन संख्या 2051 तक केवल वरिष्ठ नागरिकों की होगी। बढ़ती दीर्घायु तथा बढ़ती उम्र के जन समूह के साथ ऑस्ट्रेलिया तथा अन्य ज़गहों पर सरकारें इस प्रश्न के साथ संघर्ष कर रही हैं कि भविष्य में कौन बुजुर्ग नागरिकों की देखभाल करेगा।

इन पर विचार विमर्श अक्सर इस उम्मीद पर टिके होते हैं कि बढ़ती आयु के साथ लगभग सभी लोग बीमार तथा अयोग्य हो जाऐंगे। इसके परिणाम स्वरूप, अनेक व्यक्ति पूछ रहे हैं कि क्या मुझे अपने बल पर ही रहना चाहिए, युवा परिवार जनों के पास रहना चाहिए, सेवानिवृति आवास में चले जाना चाहिए अथवा नर्सिंग होम में स्थान सुरक्षित रखना चाहिए? क्या मैं अपनी देखभाल स्वंय कर पाऊँगी?

ग्रंथ मुझे प्रेरित करते हैं, यह याद रखने में कि हमारी कुशलता परमेश्वर** बनाए रखता है। उदाहरण के तौर पर, सतर्क तथा चुस्त रहने के बारे में परमेश्वर द्वारा दी गई क्षमता का व्याख्यान करते हुए बाइबल भजनसंहिता में कहती है: "धार्मिक, खजूर के पेड़ की तरह प्रफुल्लित होंगे: वे लेबनॉन में देवदार के पेड़ की तरह विकसित होंगे। जो भी परमेश्वर के घर में रोपे जाऐंगे, हमारे परमेश्वर के आँगन में प्रफुल्लित होंगे, वे बुढ़ापे में भी फलदायक होगें; सेहतमंद तथा समृद्ध होंगे।"

संचित वर्षों को स्वाधीनता की

हानि साथ लाने की ज़रूरत नहीं है।

तर्क की इस पंक्ति के आधार पर हम इस धारणा को अस्वीकार कर सकते हैं कि संचित वर्षो को अपने साथ खराब सेहत तथा स्वाधीनता की हानि को लाना ही होगा। क्योंकि परमेश्वर प्रेम है, वह सदा हमारी देखभाल करता रहता है। यह आध्यात्मिक समझ हमें सशक्त करती है तथा किसी भी उम्र में अधिक उपयोगी तथा रचनात्मक होने के योग्य बनाती है।

मेरी बेकर ऐडी, जिसने बिना थके लोगों की सेहत तथा आज़ादी खोजने में सहायता की, ने इस मानसिक दृष्टिकोण को स्पष्ट किया जो कि लंबे तथा क्रियाशील जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। उसने सायँस एंड हैल्थ विद् की टू दि स्क्रिपचर्स में कहा, "कभी उम्र का लेखाजोखा न रखो। मापने की भूल तथा वह सब जो

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

कुछ अच्छा तथा सुंदर है, को सीमित करने को छोड़कर इंसान सत्तर वर्षों से भी अधिक आनन्द लेगा तथा फिर भी अपने उत्साह, स्फूर्ति तथा समर्थता को बनाए रखेगा। अनश्वर **मन** द्वारा संचालित मानव सदा ही सुंदर तथा प्रभावशाली होता है। प्रत्येक अगला वर्ष बुद्धिमता, सुंदरता तथा पवित्रता का रहस्योद्घाटन करता है.... आओ हम अपनी विद्यमानता के विचारों को रमणीयता, ताज़गी तथा निरंतरता में ढालें, बजाए उम्र तथा क्षीणता में।"

यह बोध मुझे भरोसा देते हैं कि :

- अपनी व्यक्तिगत कुशलता के बारे में भयभीत होने से इन्कार कर दूँ,
- भविष्य से संबंधित अटकलों को अस्वीकार कर दूँ,
- जिए हुए वर्षों की संख्या को जोड़ने तथा स्वयं की देखभाल न कर पाने की क्षमता के साथ उन्हें मिलाने को नकार दूँ,
- सामने एक लंबे, निरोगी तथा रचनात्मक जीवन की आशा रखूँ।

जब मैं वृद्ध देखभाल से संबंधित मीडिया रिपोर्ट सुनती हूँ, मैं समर्थन करती हूँ कि कोई जीवन के किसी भी चरण पर हो इस से कोई फर्क नहीं पड़ता, **परमेश्वर** हर व्यक्ति की देखभाल कर रहा है। जो भी किसी व्यक्ति की आवश्यकता है, **परमेश्वर** की कृपा से वह आवश्यकता पूरी हो सकती है।

परमेश्वर की कृपा से हमारी

आवश्यकताएँ पूरी हो सकती हैं।

हम अति सक्रिय हो सकते हैं तथा अपनी निरंतर कुशलता के लिए यह समर्थन करके प्रार्थना कर सकते हैं कि **परमेश्वर** ने हमें **अपने** रूप में बनाया है। कि हम **उसके** आध्यात्मिक प्रतिरूप हैं। इसका अर्थ यह है कि जो कुछ भी **परमेश्वर** है वही हमारे अस्तित्व को संगठित करता है। उदाहरण के लिए, जैसे **परमेश्वर** शाश्वत **जीवन** है, हम आयुरहित हैं। जैसे **परमेश्वर आत्मा** है, हम शक्तिशाली तथा सक्रिय हैं। जैसे **परमेश्वर अन्तश्चेतना** है, हम समन्वित तथा प्रसन्न हैं। जैसे **परमेश्वर मन** है, हम बुद्धिमान तथा सक्षम हैं।

मैं स्वंय प्रतिदिन इन पंक्तियों पर प्रार्थना करती आई हूँ: "धन्यवाद पिता जी, कि **आप** सदा मुझे प्रेम करते हो तथा मेरी देखभाल करते हो। **आपने** मुझे स्वस्थ तथा समर्थ बनाया है। मैं इस धारणा को स्वीकार नहीं करूँगी कि मैं कमज़ोरी तथा अक्षमता अनुभव कर सकती हूँ। **आपने** मुझे सम्पूर्ण तथा पूर्ण बनाया है। न तो मैं अपनी देखभाल करने की क्षमता को खो सकती हूँ, न ही दूसरों पर बोझ बन सकती हूँ। **आपकी** सन्तान होने के नाते, मैं निडर हूँ तथा स्फूर्ति से भरी हुई हूँ। मैं अभी तथा सदा तरोताज़ा रहने और फलते फूलते रहने की आशा करती हूँ।"

इस प्रकार की प्रार्थना केवल सकारात्मक सोच की कसरत या जीवन के प्रति एक अच्छा दृष्टिकोण रखना ही नहीं है। यह उससे कहीं अधिक है। आध्यात्मिक सोच वैज्ञानिक ख्रीस्तीयता को व्यवहार में लाना है, जिसे क्राइस्ट जीसस ने अपने उपचारक सेवाकार्य में प्रत्यक्षीकृत किया। अपने शब्दों तथा उससे भी अधिक महत्वपूर्ण रूप में अपने, कार्यों द्वारा जीसस ने दर्शाया कि **परमेश्वर** हमें वास्तव में कितना प्रेम करता है।

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

दूसरों का स्वास्थ्य, दृष्टि, सुनने की शक्ति तथा चलने की शक्ति वापिस लाने में उन्होंने पुष्टि की कि किसी के लिए भी स्वस्थ होने तथा पूर्ण और समृद्ध जीवन जीने के लिए कभी भी देर नहीं होती।

हृदय से निकली पुकार– मेरी देखभाल कौन करेगा?– का उत्तर इस समर्थ–जीवन सत्य में है: परमेश्वर कभी नहीं थकता, कभी जर्जर नहीं होता, कभी बूढ़ा नहीं होता, इसलिए उसके बच्चे भी ऐसे नहीं हो सकते। परमेश्वर अपने सभी बेटों तथा बेटियों की पूर्ति निरन्तर जगमगाती ऊर्जा के साथ कर रहा है। हमारी प्रतिदिन की प्रार्थना में इसकी स्वंय के लिए पुष्टि करना, आने वाले वर्षों में सामर्थ्य तथा स्वतन्त्रता को बनाए रखने के लिए प्रभावशाली होता है।

कभी न बुझने वाला जीवन

सायँस एण्ड हैल्थ
246:17 (केवल), 20, 29
पवित्र बाइबल (किंग जेम्स)
भजनसंहिता 92:12 – 14

Translation © 2009 The Christian Science Publishing Society. This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.